सितम्बर २०२३
अंक १९

ज्ञानोदय प्रभा

सम्पादकीय

विश्व पटल पर धाक जमा रही है हिंदी

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल
- भारतेंदु हरिश्चंद्र

अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है। मातृभाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार की कलाएँ, असीमित शिक्षा तथा अनेक प्रकार का ज्ञान, सभी देशों से जरूर लेने चाहिए, परन्तु उनका प्रचार मातृभाषा के द्वारा ही करना चाहिए| साहित्य पुरोधा ,हिंदी गौरव ,युग निर्माता भारतेंदु जी के भाषा सम्बन्धी ये विचार कितने सारगर्भित हैं और उनकी हिंदी भाषा के प्रति गहरे प्रेम को दर्शाते हैं |

वास्तव में हमें अपनी हिंदी भाषा के प्रति प्रेम और सम्मान होना चाहिए| हमें हिंदी का प्रयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए| जैसे अपनी माँ के प्रति हम आदर सम्मान की भावना रखते हैं, ठीक उसी प्रकार हिंदी भी हमारी माँ है, उसे आदर सम्मान देना हमारा कर्तव्य है| जहाँ तक संभव हो और अन्य भाषा की बहुत आवश्यकता न हो तो हमें लिखने ,बोलने अपने विचार प्रकट करने के लिए हिंदी का ही प्रयोग करना चाहए| हिंदी का अपना विशेष महत्त्व है| भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर महात्मा गाँधी तक अनेक महापुरुषों ने हिंदी को अपनाये जाने की बात कही है और इसके महत्त्व के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं जैसे - "राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।" - बालकृष्ण शर्मा नवीन।

"हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।" - राहुल सांकृत्यायन।

"भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है।" - नलिनविलोचन शर्मा।

"उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।" - शारदाचरण मित्र।

"जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।" - देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद।

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है।" - महात्मा गाँधी आदि | १४ सितंबर, १९४९ को संवैधानिक रूप से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। संविधान के अनुच्छेद ३४३ में यह प्रावधान किया गया है कि देवनागरी लिपि के साथ हिंदी भारत की राजभाषा होगी। विश्व में हिंदी भाषी करीब ७० करोड़ लोग हैं। यह तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। १.१२ अरब बोलने वालों की संख्या के साथ अंग्रेजी पहले स्थान पर है। चीनी भाषा मेंडरिन बोलने वाले करीब १.१० अरब हैं। ५१.२९ करोड़ और ४२.२ करोड़ के साथ स्पैनिश और अरबी का क्रमश: चौथा और पांचवां स्थान है। दुनिया में मौजूद भाषाओं की जानकारी पर प्रकाशित होने वाले एथनोलॉग के २०१७ के संस्करण में २८ ऐसी भाषाएं शामिल हैं जिनमें से प्रत्येक के बोलने वाले पांच करोड़ से ज्यादा लोग हैं।

फिजी , मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो एवं संयुक्त अरब अमीरात में हिंदी अल्पसंख्यक भाषा ' भारत को बेहतर ढंग से जानने के लिए दुनिया के करीब ११५ शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन होता है। अमेरिका में ३२ विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैंब्रिज और यॉर्क यूनिवर्सिटी में हिंदी पढ़ाई जाती है।

जर्मनी के १५ शिक्षण संस्थानों ने हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया है। कई संगठन हिंदी का प्रचार करते हैं।- एक अध्ययन के मुताबिक हिंदी सामग्री की खपत करीब ९४ फीसद तक बढ़ी है। हर पांच में एक व्यक्ति हिंदी में इंटरनेट प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्स एप में हिंदी में लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिंदी इनपुट, लिपिक डॉट इन, जैसे अनेक सॉफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद हैं। हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद भी संभव है। चीन में १९४२ में हिंदी अध्ययन शुरू हुआ और १९५७ में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ। {स्रोत - दैनिक जागरण}

वर्तमान में भी हिंदी को आगे बढाने के लिए अनवरत प्रयास किए जा रहे हैं| आज विश्व स्तर पर भी हिंदी तेजी से आगे बढ़ रही है| विश्व भर में अनेक अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार और साहित्यिक कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है|

संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा भी हिंदी बन चुकी है | विश्वस्तरीय मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा को प्रमोट किया जा रहा है | विश्व हिंदी सम्मलेन एवं महोत्सवों का आयोजन निरंतर किया जा रहा है | हिंदी का महत्त्व देखते हुए सबसे ज्यादा समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित हो रहे हैं | टी. वी. चैनलों पर सर्वाधिक समाचार हिंदी में ही देखे और सुने जा सकते हैं, धारावाहिक, हिंदी फिल्मे, विज्ञापन सभी हिंदी में सर्वाधिक संख्या में आ रहे हैं| मेडिकल और इंजीनियरिंग के पाठ्यक्रम से सम्बंधित पाठ्यपुस्तकों का हिंदी में अनुवाद हो चुका है | विश्व की अनेक पुस्तकों और ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद निरंतर जारी है | हिंदी निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है|

इस माह हम सबने हिंदी दिवस को बड़े उत्साह से मनाया लेकिन यह पुनीत पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हमें अपनी भाषा पर गर्व का अनुभव होगा और अधिक से अधिक हम हिंदी भाषा का प्रयोग करेंगे | उसे आगे बढाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहेंगे| जरूरत पड़ने पर अपनी भाषा को सीखते रहेंगे | हिंदी में अनेक लेखक हुए हैं | आप भी हिंदी की किसी विधा में अपनी रूचि बनाकर रचना कर सकते हैं| क्या पता आप में से कोई महादेवी वर्मा, महा प्राण निराला, प्रेमचंद, तुलसीदास बनकर उभरे और भारत का नाम रोशन करे| आप सब में असीम सम्भावनाएँ हैं | बस आवश्यकता है उसे पहचानने की|

गुरु का महत्त्व

गुरु शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - गु और रु | गु अर्थात अन्धकार रु अर्थात प्रकाश |इस तरह गुरु वह है जो अन्धकार से प्रकाश की और ले जाए|

कहा गया है -

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया । चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अर्थात जिसने ज्ञानांजनरुप शलाका से, अज्ञानरुप अंधकार से अंध हुए लोगों की आँखें खोली, उन सभी गुरु को सादर प्रणाम|

हमारे भारत देश में आदिकाल से ही गुरूओं को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है माना जाता है कि गुरु एक ऐसा मार्ग बनाता है जिसके माध्यम से कोई भी व्यक्ति अज्ञानता से ज्ञान की ओर आसानी से बढ़ जाता है | इतना ही नहीं, ऐसा भी माना गया है कि गुरु से दीक्षा के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो पाती है |प्राचीन काल से ही सभी धर्मों में गुरूओं को ज्ञानदाता, मोक्ष मार्ग को बताने वाला और ईश्वर के समान महत्त्व दिया गया है | वेदों और पुराणों के अनुसार गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूज्य माना गया है|

यथा -

हमारे देश में गुरू का महत्त्व प्रदर्शित करने एवं उनके योगदान को ध्यान में रखते हुए उन्हें सम्मानित करने के लिए एक विशेष दिवस गुरुपूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है | गुरुपूर्णिमा का पर्व पूरी तरह गुरु को समर्पित होता है | आओ हम सभी अपने अपने गुरु को प्रणाम करें | ॐ श्री गुरुवे नमः |

अर्हम जैन कक्षा 12 द [छात्र संपादक]

सितम्बर माह की गतिविधियाँ

लघु नाटिका का आयोजन

दिनांक २ सितम्बर २०२३ दिन शनिवार को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में एक लघु नाटिका का आयोजन किया गया | यह प्रतियोगिता हिंदी विभाग द्वारा नायकन हॉल में सदनवार आयोजित की गई | जिसमें कक्षा ३ से ५ तक के ३० विद्यार्थियों ने भाग लिया | इस प्रतियोगिता में ४ लघुनाटिकाओं का आयोजन किया गया, जिनके विषय निम्नानुसार थे-

क) अनपढ़ बीबी - टैगोर सदन

ख) पिता का महत्त्व - विवेकानंद सदन

ग) समय का महत्त्व - लक्ष्मी सदन

घ) बस्तों की फ़रियाद - सरोजिनी सदन

इस प्रतियोगिता का उद्देश्य हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करना था| साथ ही मनोरंजन के साथ-साथ सभी को कोई न कोई सन्देश देना था | अनपढ़ बीबी नाटिका के माध्यम से यह बताया गया कि जीवन में शिक्षा का कितना महत्त्व है | शिक्षा के बिना जीवन व्यर्थ है |

पिता का महत्त्व नाटिका के माध्यम से यह बताया गया कि जीवन में पिता अपने बच्चों की ख्वाइशें पूरी करने के लिए कितना संघर्ष करते हैं | हमें अपने माता-पिता का आदर, सम्मान करना चाहिए|

समय का महत्त्व नाटिका के माध्यम से बताया गया कि एक बार समय निकल जाने के बाद वह वापस नहीं आता | इसलिए समय का सदुपयोग करना सीखें और सफलता को प्राप्त करें |
बस्तों की फ़रियाद नाटिका के माध्यम से यह दर्शाया गया कि वर्तमान समय में विद्यार्थी ज्ञान के बोध से ज़्यादा किताबों का बोझ उठा रहे हैं | विद्यार्थियों के किताबी ज्ञान से ज़्यादा हमें उनके सर्वंगीण विकास पर ध्यान देना चाहिए |
इस गतिविधि के द्वारा प्रतिभागियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास हुआ | इस प्रतियोगिता में सरोजिनी सदन ने प्रथम स्थान एवं टैगोर सदन ने द्वितीय स्थान एवं लक्ष्मी और विवेकानंद सदन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया |
इस गतिविधि की प्रभारी सुश्री आयुषी समैया थीं एवं निर्णायक का कार्यभार श्रीमान राकेश बहादुर, श्रीमती कुसुम पटेल ने संभाला |

हिंदी दिवस समारोह

ज्ञानोदय एस. एम. व्ही .एम. हा. से. स्कूल, खुरई की जूनियर शाखा में बड़े उत्साह से हिंदी दिवस मनाया गया |

भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में हिंदी को अपनाने के उपलक्ष्य में भारत में हर साल १४ सितंबर हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान ने, १९५० में, 'देवनागरी' लिपि में हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया। संघ की आधिकारिक भाषा | यह दिन विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, सेमिनारों और गतिविधियों के साथ मनाया जाता है जो हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति में इसके महत्त्व को बढ़ावा देते हैं।

रैलियां अक्सर हिंदी दिवस समारोह के हिस्से के रूप में आयोजित की जाती हैं, इसलिए हमने 'नर्सरी से दूसरी' कक्षा के लिए रैली का आयोजन किया था। रैली में स्कूल के छात्र- छात्रा, हमारे संस्थान की प्रधानाध्यापिका, शिक्षक, बैनर लिए हुए थे, जो हिंदी भाषा और भारत की भाषाई विविधता के संरक्षण में इसके महत्त्व को बढ़ावा देते थे।

इस कार्यक्रम से छात्रों को समृद्ध परिणाम प्राप्त हुए और उन्होंने हमारी राष्ट्रीय भाषा यानी "हिंदी" के महत्त्व को समझा। कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक था | बाल शिक्षार्थियों के हाथ में नारे लिखी पट्टिकाएँ अद्भुत दृश्य उपस्थित कर रही थीं |
इस कार्यक्रम की प्रभारी सुश्री शोभा भरद्वाज थीं |

जन्मदिन का जश्न

दिनांक ९ सितम्बर २०२३ को ज्ञानोदय एस. एम. व्ही. एम. हायर. सेक. स्कूल, खुरई की जूनियर शाखा में विद्यार्थियों का जन्मदिन मनाया गया |

इस विचार पर विश्वास करना कि प्रत्येक व्यक्ति का जन्मदिन उसके लिए एक बहुत ही विशेष दिन होता है। जन्मदिन की यादें एकत्रित करने का उत्साह अन्य आयु वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में स्कूली विद्यार्थियों में कहीं अधिक है। उसी तरह हम भी बच्चों को उनके जन्मदिन के शुभ अवसर पर खास महसूस कराने की कोशिश करते हैं ।

हम जन्मदिन वाले बच्चों को पूरी टीम की ओर से एक किताब उपहार में देते हैं। यह उन्हें विशिष्ट महसूस कराता है। यह खूबसूरत यादें इकट्ठा करने और उन्हें उल्लेखनीय घटनाओं में बदलने के लिए हमारे कदमों में से एक है। सभी बच्चों ने सीखा कि दूसरों की खुशी में कैसे खुश रहना है और अपने दोस्तों को कैसे खुश करना है। दूसरे शब्दों में उन्होंने जान लिया है कि खुशी का रहस्य दूसरों की खुशी है। इस कार्यक्रम की प्रभारी सुश्री शोभा भरद्वाज थीं|

शिक्षक दिवस समारोह

ज्ञानोदय हायर सेकेंडरी स्कूल ने ५ सितंबर २०२३ को शिक्षक दिवस बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया। यह कार्यक्रम छात्रों द्वारा सावधानीपूर्वक आयोजित किया गया था, और इसने अपने शिक्षकों के प्रति उनकी गहरी प्रशंसा और सम्मान को प्रदर्शित किया। इस यादगार उत्सव के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ संपन्न हुईं -

उत्सव की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, जो अंधकार के उन्मूलन और ज्ञान के प्रसार का प्रतीक है। इसके बाद विघ्नहर्ता भगवान गणेश को सम्मान देते हुए मनमोहक गणेश वंदना प्रस्तुत की गई। छात्रों ने अपने शिक्षकों के साथ अपने हार्दिक विचार और अनुभव साझा किए, उनके मार्गदर्शन और समर्थन के लिए उनका आभार व्यक्त किया।

स्कूल कैप्टन ने छात्रों के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए एक प्रेरक भाषण दिया। इसके पश्चात् एक मनमोहक समूह नृत्य प्रदर्शन ने छात्रों की प्रतिभा और रचनात्मकता को प्रदर्शित किया, जिससे दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। नृत्य के बाद एक भावपूर्ण हिंदी कविता पाठ हुआ, जिसने सभी के दिलों को छू लिया। इसके पश्चात् हेड गर्ल ने सभा को संबोधित करते हुए शिक्षक-छात्र बंधन के महत्त्व और शिक्षकों के छात्रों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव पर अपने भाव व्यक्त किए | इसके पश्चात् एक अन्य समूह नृत्य प्रदर्शन ने दर्शकों को और अधिक मंत्रमुग्ध कर दिया | इस दिन को यादगार बनाने के लिए छात्रों ने जी जान से प्रयास किया।

इसके पश्चात् एक शानदार अंग्रेजी कविता पाठ ने उत्सव में भाषाई विविधता का स्पर्श जोड़ दिया। और अंत में एक जीवंत नृत्य प्रदर्शन ने कला के प्रति छात्रों के जुनून को प्रदर्शित करते हुए कार्यक्रम में ऊर्जा का संचार किया। सचमुच सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत मनोरंजक, मनमोहक, शिक्षाप्रद रहा | जिसमे छात्रों की मेहनत स्पष्ट झलकती थी |

निबंध प्रतियोगिता

५ सितम्बर को ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्यालय में एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | इसका विषय था – 'खुरई विधानसभा का विकास'| यह प्रतियोगिता कक्षा ९ से १२ एवं महाविद्यालय के स्तर पर सम्पूर्ण क्षेत्र में आयोजित की गई थी |

इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय स्तर पर ११०००, हायर सेकेंडरी स्तर पर ७००० एवं हाईस्कूल के स्तर पर ५००० रुपये की इनाम राशि रखी गई थी | ज्ञानोदय विद्यालय के विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया | इस प्रतियोगिता के आयोजक माननीय भूपेन्द्र सिंह थे |

श्लोक गायन प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता २ सितम्बर २०२३ को ज्ञानोदय सर्व मंगल विद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा सिनेमा हॉल में कक्षा वार आयोजित की गई | जिसमे कक्षा ६ से ८ तक के १२ विद्यार्थियों ने भाग लिया | इस प्रतियोगिता का उद्देश्य संस्कृत भाषा को प्रोत्साहित करना था | इस गतिविधि से प्रतिभागियों की गायन एवं वाचन अभिव्यक्ति का विकास हुआ |

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान मानसी चौरसिया कक्षा सातवीं 'स' ने एवं द्वितीय स्थान अपूर्वी जैन कक्षा सातवीं 'अ' ने प्राप्त किया |

इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका श्रीमान अखिलेश जैन एवं श्रीमान हेमंत मेहर ने निभाई | इस प्रतियोगिता के प्रभारी शिक्षक श्री जितेन्द्र तिवारी एवं श्री पी. दिवाकर थे |

दशलक्षण भाषण प्रतियोगिता

ज्ञानोदय स्कूल के नायकन सभागार में ३० सितम्बर २०२३ को अंतरसदनीय दशलक्षण भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया | इस प्रतियोगिता में कक्षा कक्षा ६ से ८ वीं के विद्यार्थियों ने भाग लिया |

जिसमें चारों सदन के बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी प्रतियोगियों ने दशलक्षण के दस धर्मों के महत्त्व को प्रतिपादित किया। इस कार्यक्रम में सभी बच्चे उपस्थित रहें।

कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के अन्दर नैतिक व धार्मिक गुणों को विकसित करके उन्हें अपने जीवन में अपनाना था। निर्णायक मंडल में श्री प्रशांत दिवाकर व श्रीमती प्रियंका जैन मेडम थी। इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर लक्ष्मी सदन से दिशी जैन कक्षा ७ 'स' एवं द्वितीय स्थान पर सरोजनी सदन से जिनांश जैन कक्षा ८ 'स' रहे। प्रतियोगिता के अंत में प्राचार्य महोदय ने सभी बच्चों को अपने संबोधन के द्वारा मार्गदर्शन दिया । इस प्रतियोगिता के प्रभारी श्री अखिलेश जैन थे|

बोडमास गतिविधि

२७ सितंबर २०२३ दिन- बुधवार को ज्ञानोदय सर्वमंगल विद्यालय में बोडमास गतिविधि का आयोजन किया गया|

गतिविधि की शुरुआत BODMAS नियम की एक छोटी सी नाटिका से हुई, जिसमें बताया गया कि BODMAS में B = कोष्ठक, O = का (of) अर्थात वर्गमूल या घनमूल अथवा वर्ग व घन, D = भाग (Divide) M = गुणा (Multiplication) A = जोड़ (Add) S = बाकी (Subtraction) इस तरह BODMAS नियम की उत्पत्ति हुई| इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य छात्रों को BODMAS क्रम से परिचित कराना था एवं संचालन और गणितीय अभिव्यक्तियों को सही ढंग से हल करने के लिए इसे लागू करने में उनकी सहायता करना था|

इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की कुल संख्या २४ थी। इनमें से १३ प्रहसन के और ११ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के हैं। इस प्रतियोगिता में लक्ष्मी हाउस, टैगोर हाउस, सरोजिनी हाउस और विवेकानन्द हाउस ने भाग लिया| प्रत्येक सदन से तीन प्रतिभागियों ने प्रश्नोत्तरी में भाग लिया। इस प्रतियोगिता के दर्शक समूह में कक्षा चार और पांचवीं के विद्यार्थी थे| इस प्रतियोगिता में टैगोर हाउस विजयी रहा और दूसरे स्थान पर विवेकानंद हाउस रहा| इस प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका सुश्री खुशबू मंसूरी ने निभाई और इस गतिविधि की प्रभारी सुश्री पूजा जैन थीं|

अंग्रेजी कविता पाठ प्रतियोगिता

ज्ञानोदय विद्यालय में ३० सितम्बर को स्कूल के छठवीं कक्षा के छात्रों ने स्कूल के सिनेमा हॉल में आयोजित अंग्रेजी कविता पाठ प्रतियोगिता में भाग लिया।

इस मुकाबले में गुंजन, अनन्या गोस्वामी, और मार्तंड ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से सबका मन मोह लिया। छात्रों ने अपनी प्रस्तुतियों में प्रभावपूर्ण भाषा और सुंदर आवाज़ में कविताओं को पिरोकर प्रस्तुत किया। इनमें से गुंजन, अनन्या गोस्वामी, और मार्तंड ने सुन्दर प्रस्तुति दी|

इस प्रतियोगिता में गुंजन ने पहला स्थान हासिल किया, अनन्या गोस्वामी द्वितीय स्थान पर रहीं, और मार्तंड ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों में कविता के प्रति रूचि जागृत करना था| इस प्रतियोगिता की प्रभारी सुश्री नवनी श्रीवास्तव थीं|

विद्यार्थी कोना

गुरु की महिमा

गुरु बिन ज्ञान नहीं,
ज्ञान के बिना कोई महान नहीं |
भटक के जाता है जब इंसान ,
तब गुरु ही देता है ज्ञान |
ईश्वर के बाद अगर कोई है ,
तो वे गुरु है |
दुनिया से वाकिफ़ जो कराता है,
वो गुरु है |
हमें जो अच्छा इंसान बनाता है,
वो गुरु है |
हमारी कमियों को जो बताता है,
वो गुरु है |

-सार्थक चौबे
पांचवी 'स'

बन्दर और डंडा

बंदरों के आतंक से आने जाने वाले सभी लोग भयभीत थे | चंदू ने हाथ में डंडा पकड़ा और वह बंदरों को भगाने लगा | उसके हाथ में लंबे डंडे को देखकर बंदर पास नहीं फटकते | चंदू के डंडे को देखकर रिया को लगा कि हाथ में छड़ी देखकर बंदर घबरा जाते हैं | उसने भी एक छोटी सी डंडी पकड़ी और मस्त चाल से सड़क पर चलने लगी | उस समय सड़क पर कोई गाड़ी या राहगीर नहीं था | बंदरों ने रिया को घेर लिया | उसके पास केले थे | उन्होंने रिया से केले छीन लिए | अब वह अपने डंडे को देख रही थी | चंदू को देखकर तो बंदर भाग जाते हैं जबकि वह मुझसे भी दुबला पतला है | फिर क्यों उन्हें मेरे डंडे से और मुझसे डर नहीं लगा | उसने चंदू के डंडे को याद किया और अपने डंडे की ओर देखकर मुस्करा दी- "अरे! मेरा डंडा तो बहुत छोटा है |"
शिक्षा- हमें कभी भी किसी की नकल नहीं करना चाहिए अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है |

-माही समैया
आठवी 'द'

कितना सुंदर मेरा स्कूल

कितना सुंदर मेरा स्कूल
कितना बड़ा मेरा स्कूल
आठ बजे में स्कूल जाती,
फिर २ बजे में घर को आती |

मेरी स्कूल में फूल खिले हैं
सुंदर-सुंदर, रंग- बिरंगे
टीचर हमको पाठ पढ़ाती,
नई-नई बातें बतलाती |
यहाँ पढाई के साथ-साथ
नए-नए खेल सिखलाते हैं
कितना प्यारा मेरा स्कूल
कितना मोहक मेरा स्कूल |

-काव्या ठाकुर
पांचवी 'अ'

सबसे बड़ी सीख

यह कहानी तीन दोस्तों की है| ज्ञान, धन और विश्वास | तीनों बहुत अच्छे दोस्त थे | तीनों में प्यार भी बहुत था | एक बार किसी वजह से तीनों को अलग होना पड़ा, तो तीनों ने एक दूसरे से सवाल किया कि आज के बाद हम कब, कहाँ और कैसे मिलेंगे ? ज्ञान ने बोला- मैं मंदिर, मस्जिद और किताबों में मिलूंगा | धन ने कहा- मैं अमीरों के पास मिलूंगा | विश्वास चुप रहा और कुछ नहीं बोला | जब दोनों ने उससे चुप रहने का कारण पूछा- तो विश्वास ने रोते हुए कहा- मैं एक बार चला गया, तो फिर कभी नहीं मिल पाऊंगा| ये छोटी सी कहानी हमें सिखाती है कि विश्वास एक ऐसी चीज़ है जो एक बार टूट जाए तो फिर उसका वापसआना बहुत मुश्किल है |

-वैष्णवी ठाकुर
पांचवी 'स'

हिंदी के विषय में महापुरुषों के विचार

"राष्ट्रभाषा के बिना आजादी बेकार है।" - अवनींद्रकुमार विद्यालंकार।
"हिंदी का काम देश का काम है, समूचे राष्ट्रनिर्माण का प्रश्न है।" - बाबूराम सक्सेना।
" समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।" - (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर।
"अकबर से लेकर औरंगजेब तक मुगलों ने जिस देशभाषा का स्वागत किया वह ब्रजभाषा थी।" -रामचंद्र शुक्ल।

विचार

"सफलता उन्हीं को मिलती है, जो कठिनाइयों से डरते नहीं है और अपने लक्ष्य पर अडिग बने रहते हैं| संकट से मुक्ति पाने का सबसे सरल उपाय है- उसी को औज़ार बनाकर उसे पराजित करना |"

-कनिष्क श्रीवास्तव
पांचवी 'स'

"हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" - वी. कृष्णस्वामी अय्यर।
"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।" - बालकृष्ण शर्मा नवीन।
"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।" - वाल्टर चेनिंग।
"हिंदी को तुरंत शिक्षा का माध्यम बनाइये।" - बेरिस कल्यएव
"देश को एक सूत्र में बाँधे रखने के लिए एक भाषा की आवश्यकता है।" - सेठ गोविंददास।"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।" - राहुल सांकृत्यायन।
"समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिंदुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिंदी या हिंदुस्तानी है।" -सर जार्ज ग्रियर्सन।
"भारत की परंपरागत राष्ट्रभाषा हिंदी है।" - नलिनविलोचन शर्मा।
"जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।" - (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह।
"अपनी सरलता के कारण हिंदी प्रवासी भाइयों की स्वत: राष्ट्रभाषा हो गई।" - भवानीदयाल संन्यासी।
"भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।" - टी. माधवराव।
"हिंदी हिंद की, हिंदियों की भाषा है।" - र. रा. दिवाकर।
"हमारी हिंदी भाषा का साहित्य किसी भी दूसरी भारतीय भाषा से किसी अंश से कम नहीं है।" - (रायबहादुर) रामरणविजय सिंह।

"वही भाषा जीवित और जाग्रत रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके।" - पीर मुहम्मद मूनिस।
"हिंदी भाषा अपनी अनेक धाराओं के साथ प्रशस्त क्षेत्र में प्रखर गति से प्रकाशित हो रही है।" - छविनाथ पांडेय।
"देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है।" - रविशंकर शुक्ल।
"हमारी नागरी दुनिया की सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि है।" - राहुल सांकृत्यायन।
"नागरी प्रचार देश उन्नति का द्वार है।" - गोपाललाल खत्री।
" उसी दिन मेरा जीवन सफल होगा जिस दिन मैं सारे भारतवासियों के साथ शुद्ध हिंदी में वार्तालाप करूँगा।" - शारदाचरण मित्र।
"हिंदी के ऊपर आघात पहुँचाना हमारे प्राणधर्म पर आघात पहुँचाना है।" - जगन्नाथप्रसाद मिश्र।
"हिंदी जाननेवाला व्यक्ति देश के किसी कोने में जाकर अपना काम चला लेता है।" - देवव्रत शास्त्री।
"हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता।" - गोविन्दवल्लभ पंत।
"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" - राजेंद्रप्रसाद।

-संग्रह
-ऋषिका श्रीवास्तव

आधुनिक भारत

भारत एक विशाल देश हैं यहाँ पर विभिन्न विभिन्न संस्कृति के लोग रहते हैं | हर संस्कृति का पहनावा, खानपान अलग -अलग होता है | हमारा देश भारत दिन प्रतिदिन विश्व पर गहरा प्रभाव डाल रहा है |अगर हम तकनीक के विषय में बात करें तो भारत विश्व में श्रेष्ठ स्थान पर है | हमारा देश आधुनिकता के दौर में तेजी से तरक्की कर रहा है | अगर हम भारत के विदेशों से सम्बन्ध के बारे में बात करें तो आज के दौर में भारत के बहुत ही अच्छे सम्बन्ध है |अगर हम अर्थ व्यवस्था की बात करें तो हमारा भारत इसमे भी तरक्की कर रहा है | हाल ही की रिपोर्ट के अनुसार भारत विश्व की पाँचवी अर्थव्यवस्था बन चुका है | ऐसा माना जा रहा है कि २०३० तक भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्था बनकर उभरेगा | अगर हम भारत को जनसँख्या की दृष्टि से देखें तो भारत ने विश्व में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है, हालाँकि जनसँख्या नियंत्रण के व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं | आज भारत विश्व में सर्वाधिक युवाओं का देश है जो भारत की तरक्की में अहम् भूमिका निभाएंगे | सब जानते हैं कि किसी भी देश की प्रगति में युवा पीढ़ी का अहम् योगदान होता है | अंत में यही कहना चाहूँगा कि आधुनिक दौर में भारत मजबूत स्थिति से गुजर रहा है और आगे भी मजबूत होता जाएगा ऐसा मेरा विश्वास है |

-अमन जैन कक्षा १२ द

जीवन

मैं हूँ या न हूँ
क्या फर्क है
क्या मेरी बातों का कहीं जिक्र है
मैं तो यूँ ही खामोश हूँ
ज़िन्दगी कम नियम ज्यादा
चीजें कम कीमत ज्यादा
ऐसी ज़िन्दगी का क्या करना
जिसमें हर पल हो जैसे मरना
चलो एक नए जीवन की शुरुआत करें
पीछे की छोड़ आज की बात करें
ऐसा कभी मत बोल
ज़िन्दगी है गन्दगी में
कुछ को तो ये भी नसीब नहीं
किसी को खाने नहीं
किसी को पीने
किसी को तन की कमी
किसी को धन की
ऐसे जीवन में प्रयास करना पड़ता है
न चाहे भी कभी संघर्ष करना पड़ता है
भविष्य की सोच आज को क्यों बर्बाद करता है
आज खाता है तो कल का पेट क्यों भरता है
न चाहते हुए भी संघर्ष करना पड़ता है |

-आदीश जैन कक्षा ११ स

हिंदी दिवस

दिवस १४ सितम्बर को मनाया जाता है | १४ सितम्बर १९५० में भारत ने देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी भाषा को अधिकारिक भाषा घोषित किया था| हिंदी भाषा हमारी मातृभाषा भी है | हिंदी में सरकारी कामकाज भी होते हैं क्योंकि भारत में ज्यादा से ज्यादा लोग हिंदी में लिखना बोलना जानते हैं |हिंदी प्राचीन काल से बोले जाने वाली भाषा है | हमें हमारी हिंदी भाषा पर गर्व करना चाहिए | हिंदी दिवस मनाने का उद्देश्य यह है कि हम हमारी भाषा को भूलें नहीं और हमेशा इसका आदरपूर्वक प्रयोग करते रहें | हिंदी भारत में ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में प्रयोग की जाने लगी है | देश विदेश के लोग हिंदी को पसंद करते हैं और इसे बोलना सीखते हैं | लेकिन यह चिंता का विषय है कि आज की नई पीढ़ी इस भाषा को भूलती जा रही है |हिंदी भाषा को बोलने में शर्माती है, उन्हें लगता है कि लोग उन्हें अनपढ़ न समझें परन्तु अपनी भाषा में बोलना किसी शर्म की बात नहीं है यदि दूसरे उनका मजाक उड़ाते हैं तो भारतीयों को अपनी भाषा का महत्त्व बताना चाहिए | हिंदी अभी तक राष्ट्र भाषा नहीं बन पाई वह अभी संपर्क और राजभाषा के रूप में ही प्रतिष्ठित है| हिंदी भाषा को बचाने के लिए हमें हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए और इसे देश विदेश में फैलाना चाहिए | आओ सभी हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयास करें | सभी लोग बोलो-

"मेरा मान है हिंदी, मेरी शान है हिंदी "

भूमि छुगानी कक्षा ९ ब

गणेश जी

हमारे प्यारे विघ्नहर्ता गणेशा
तेरे आने से लगे ऐसा जैसे हो खुशियों का मेला
तेरे संग में रहता है चूहा
जिसने मेरे मन को है मोहा
माता पार्वती और शिव के नन्द
तेरी मुस्कनिया है मंद मंद
तुम्हें ये जग जाने
तुम्हे मोदक अच्छे लगते हैं खाने
तेरी शरण में जो आवे
कभी खाली न जावे
प्रथम पूज्य हो तुम देवों के प्यारे
कितने ही भक्त तुमने हैं तारे
तेरी शरण में जो आए
सिर्फ खुशियाँ ही पाए
तेरी छवि है प्यारी
जिस पर बलिहारी जाए दुनिया सारी

वेद श्रीवास्तव कक्षा ९ ब

पर्यूषण महापर्व

जैन धर्म के लोग पर्यूषण नामक एक पर्व मनाते हैं | जिसे वह बड़े धूम धाम से मनाते हैं | पर्यूषण के पर्व को जैन महापर्व भी कहते हैं क्योंकि ये पर्व उनके मुख्य होते हैं | जिन्हें वे साल में एक बार मनाते हैं | परन्तु यह पर्व साल में तीन बार आता है, पर वह इसे केवल एक बार ही मनाते हैं, वह भी वर्षा के मौसम में | वे इसे दस लक्षण पर्व भी कहते हैं | वे इस पर्व में दस लक्षणों को धारण करने का प्रयत्न करते हैं | इन दिनों वह बाहर का खाना नहीं खाते| वे दस दिन व्रत रखते हैं और एक आसन करते हैं | वे उपवास में सुबह से कुछ नहीं खाते पीते |वे अगले दिन भगवान के दर्शन करने के बाद ही कुछ खाते हैं |

आयुष साहू कक्षा ९ ब

पुरुषार्थ

माना की हर फूल को मुरझाना होता है
पर उससे पहले पूर्ण सौन्दर्य को पाना होता है
ये दुनिया ऐसी ही है जनाब
यहाँ कदम कदम पर पुरुषार्थ दिखाना होता है |
माना की सूरज को रोज अस्त होना होता है |
पर उससे पहले जग को प्रकाश से भरना होता है |
ये दुनिया ऐसी ही है जनाब
यहाँ कदम कदम पर पुरुषार्थ दिखाना होता है
माना कि हर दरिया को सागर से मिलना होता है
पर उससे पहले सभी की प्यास बुझाना होता है
ये दुनिया ऐसी ही है जनाब
यहाँ कदम कदम पर पुरुषार्थ दिखाना होता है |

-ख्याति समैया कक्षा ९ द

पहेलियाँ

१. किसकी शादी बच्चे नहीं देख सकते ?

२. वह कौन सा पेड़ है जिस पर हम चढ़ नहीं सकते ?

३. कान उमेठो गाता कौन ? तुम्हारा मन बहलाता कौन ?

४. लाल लाल आँखें, सफ़ेद सफ़ेद बाल, लम्बे लम्बे कान
बोलो क्या है उसका नाम ?

उत्तर –
१. माँ की २. केले का
३. रेडियो ४. खरगोश

संग्रह
–श्रुति मिश्रा कक्षा ७ द

शिक्षक कोना

काश, हम कभी बड़े न होते
काश, हम कभी बड़े न होते,
ममता के अंचल में ही छुपे रहते|
यह जिम्मेदारियों का बोझ,
यह जीवन की परेशानियाँ|
जिंदगी में दर-ब-दर भटकना,
सब कुछ पाना और खो देना |
दो पल का सुकून नहीं रह गया,
समय के चक्र में सबकुछ छिन गया |
काश हम कभी बड़े न होते,
सुबह हुई,रात हुई, यही क्रम चलता रहा |
अपने कामों में इतना खोते गए,
न समय का पता चला, न उम्र का |
शीशे ने हमको लकीरें दिखा दी,
हर क्षण एक नई पहेली है |
कहीं कुआँ तो कहीं खाई है,
कुछ खट्टा, तो कुछ मीठा सा जीवन है |
यही जीवन की सच्चाई है,
काश, हम कभी बड़े न होते |

सुश्री आयुषी समैया [शिक्षिका]

चंदा मामा

चंदा मामा, चंदा मामा,
शरद पूर्णिमा नजदीक है,
लेकिन अब तुम दूर नहीं हो...
क्या आपने प्रज्ञान से बात की है?

चंदा मामा, चंदा मामा
लोग आपसे मिलने आएंगे
क्या इसका असर आपकी उदारता पर पड़ेगा?
क्या इससे हमारा बंधन कम हो जाएगा?

चंदामामा, चंदा मामा
तुम्हारा चेहरा पीला क्यों है?
कमज़ोर और बीमार दिख रहे हो |
क्या अंतरिक्ष के कबाड़ से आपकी मुस्कुराहट पर असर पड़ता है?
लेकिन इन सब ने आपकी मुस्कुराहट को कम तो कर दिया है
यह सच है न ?
क्या नहीं !
तो मुस्कराओ न पहले की तरह |

-श्री निराकार पटनायक [शिक्षक]

आओ बंधु इस महफ़िल में, सब मिलके रंग जमाते हैं,
कुछ यहाँ प्रदर्शन करते हैं, कुछ ताली यहाँ बजाते हैं।

अपनी अपनी विद्याओं का, मिलकर स्वनिर्मित मंच सजा,
मन वीणा की तान छेड़, निज यादों का मृदंग बजा,

कुछ अपनों की सुनते हैं, कुछ अपनी यहाँ सुनाते हैं।
आओ बंधु इस महफ़िल में सब मिलके रंग जमाते हैं।

वर्जनाओं के घेरे में, न जाने कब हम बड़े हुए,
जीवन के झंझावातों से कई बार गिरे, फिर खड़े हुए,

घड़ी एक, आधी सही, हम फिर बालक बन जाते हैं।
आओ बंधु इस महफ़िल में सब मिलके रंग जमाते हैं।
रोना तो घर घर है यारों, कष्टों से भरी इस दुनिया में,
मत सोच अभी तू, क्या है रखा? अपने जीवन की पुड़िया में,

भूल घड़ी भर कष्ट सभी, हम हँसते और हँसाते हैं।

आओ बंधु इस महफ़िल में सब मिलके रंग जमाते हैं।
कुछ यहाँ प्रदर्शन करते हैं, कुछ ताली यहाँ बजाते हैं।।

-श्री हेमंत मैहर [शिक्षक]

शिक्षक दिवस

आज का शिक्षक दिवस कुछ अलग और नया था,
जो हमने पहले कभी नहीं किया था,
या यूँ कहें कि जो काम हमने पहले कभी करने के बारे में सोचा भी नहीं था,
उसे करने के बाद हमें बहुत ख़ुशी महसूस हुई।
आज का शिक्षक दिवस हमें नया अंदाज सिखा गया
हमें अपने लिए भी कुछ करने का रास्ता दिखा गया
आज लगता है कि सही मायने में हमने शिक्षक दिवस मनाया है
अभी तक तो एक ढर्रे पर इसे मनाए जा रहे थे
पर कुछ अलग हटके करा तो समझ आया की
क्या था जो हम खोए जा रहे थे
सही कहा है किसी ने देर आए पर दुरस्त आए।
सही है
आज का शिक्षक दिवस कुछ अलग और नया था ...
आज का शिक्षक दिवस कुछ अलग और नया था ।

-कनिष्ठ शिक्षिका
मनप्रीत सलूजा

एहसासों की दुनिया

अंधेरी गुफ़ा में सुकून ढूंढता मन
आहिस्ता आहिस्ता सुनाई देनी वाली
वो समुंदर की लहरों की धुन
उस रात में जैसे चन्द्रमा निहार रहा हो
मचलती लहरों को और बेरुखी में हम
एक टक गौर से देखा लहरों को
आंखो में समेटने की तलब जगी
दूर दूर तक सिर्फ समूंदर की तरफदारी
खुद में ही कुछ गुनगुनाते गुन गुनाते
मैं बैठ गया साहिल पे जज्बात सुना के
शीतल रेत पर लहरों का बार बार आना
मेरे मन को एकाग्र कर जाता लहरों का ताना
उठता कभी जमीदोज हो जाता अविरल जल
तिलस्मी किरदार नापता उसका अनभिज्ञ कल
मैं खोया था अचानक रुका हवाओं की खनक पर
सोचा रहा था अहसान समुंदर का खारे नमक पर
एक हल्की भनक शायद में बिस्तर पर पड़ा हुआ
सपना छोड़कर में बिस्तर से उठ खड़ा हुआ

-सलिल जैन [शिक्षक]

राव महीपक्ष परमार (सुगिरा जागीर)

सन् १८५७ के विद्रोह में अंग्रेजों ने राव महीपक्ष पर तात्या टोपे व अन्य विद्रोहियों का साथ देने का आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया। और बाद में बांदा के भूरागढ़ किले में राव महीपक्ष एवं ८१ अन्य सैनिकों को फांसी की सजा दी गई। जन साधारण के बीच वह राव महीपत सिंह के नाम से भी प्रसिद्ध थे।

राव महीपक्ष परमार का जन्म दीवान व सामंत राव रायसिंह परमार की ११ वीं पीढ़ी में हुआ था। जन्म के समय उनके पिता राव छत्रसाल परमार सुगिरा के राव पद पर आसीन थे। कुंवर महीपक्ष का जन्म १८३० ईस्वी में हुआ था। बाल्यावस्था से ही वे युद्ध, घुड़सवारी, शस्त्र संचालन और राजनीति में रुचि लेने लगे थे। आध्यात्मिक विचारों के कारण लोग इन्हें आदर व सम्मान देते थे। अपने पिता राव छत्रसाल की आकस्मिक मृत्यु के बाद महीपक्ष राव पद से विभूषित किए गए।
राव महीपक्ष के संबंध जैतपुर के राजा पारीक्षत से बहुत मधुर थे। वह कुलपहाड़ के दीवान देशपथ टौरिया की राष्ट्रभक्ति व वीरता से बहुत प्रभावित थे। चरखारी के नरेश रतन सिंह से कुछ मनमुटाव था। दूसरी ओर रतन सिंह अंग्रेज कंपनी सरकार के प्रति समर्पित थे। अतः राव महीपक्ष उनसे दूरी बनाकर चलते थे। जैतपुर के राजा परीक्षत की मृत्यु के बाद राव महीपक्ष उनकी विधवा रानी का दुख देखकर अंग्रेज कंपनी सरकार के प्रति और विद्रोही हो गए। अंग्रेजों से संधि करने वाले राज्यों के प्रति उनकी कोई सहानुभूति नहीं रही। १८५७ ईसवी के विद्रोह के समय राव माहीपक्ष अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ सुगिरा और कुलपहाड़ के विद्रोहियों का मनोबल बढ़ाने और नेतृत्व करने में जुट गए। कुलपहाड़ के दीवान देशपथ के साथ गुप्त मंत्रणाएं करते रहे। वह नव युवकों को सैन्य प्रशिक्षण प्रदान करते और उनमें मातृभूमि की रक्षा की भावना जगाते।एक समय ऐसा आया जब तात्या टोपे अंग्रेजों को सबक सिखाने और चरखारी नरेश को दंडित करने के लिए सुगिरा पधारे। राव महीपक्ष ने तात्या टोपे का पूरा साथ दिया। सन १८५८ के शुरुआती महीनों में तात्या टोपे का युद्ध क्षेत्र बुंदेलखंड ही था। तात्या टोपे, नाना साहब और बुंदेलखंड के क्षेत्रीय राजाओं के बीच हुए पत्र व्यवहार से पता चलता है कि बुंदेलखंड उनके लिए सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था विरोध जारी रखने के लिए अतिरिक्त सैन्य शक्ति और धन की आवश्यकता थी अतः तात्या टोपे ने अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए बुंदेलखंड में चरखारी के पास डेरा डाल दिया।जनवरी १८५८ ईसवी में तात्या टोपे की ओर से कई पत्र चरखारी के राजा रतन सिंह को भेजे गए और उनसे तात्या टोपे का साथ देने का आग्रह किया गया। लेकिन राजा रतन सिंह अंग्रेजी सरकार के प्रति वफादार बने रहे। तात्या टोपे ने राजा रतन सिंह को भारतीय खेमे में लाने की हर एक कोशिश की क्योंकि वह खून खराबे में अपने ही भारतीय लोगों का नुकसान नहीं होने देना चाहते थे। ३१ जनवरी १८५८ को तात्या टोपे ने नाना साहब को लिखे पत्र में अपनी व्यथा को व्यक्त किया है। पत्र से ज्ञात होता है कि वह इस युद्ध को लड़ना नहीं चाहते थे लेकिन परिस्थितियों ने युद्ध को अनिवार्य बना दिया। तात्या टोपे, राव महीपक्ष कुलपहाड़ दीवान देशपथ और मनराखन वाजपेई के मध्य गुप्त मंत्रणा हुई। तात्या टोपे के पास तोपों की कमी थी। राव महीपक्ष और दीवान देशपथ के सहयोग से इमली के तने को खोखला कर के लकड़ी की तोप बनाई गई। १ मार्च १८५८ को तात्या टोपे के नेतृत्व में चरखारी को घेर लिया गया। उस समय अंग्रेज असिस्टेंट मजिस्ट्रेट कलेक्टर जे एच कार्ने ने चरखारी राजा रतन सिंह के पास शरण ले रखी थी। ४ मार्च को कार्ने ने गवर्नर जनरल के सेक्रेटरी को पत्र लिखकर उस आक्रामक घेरे बंदी का जिक्र किया था। जिससे ज्ञात होता है कि वह बहुत डरा हुआ था। होलिका दहन वाली रात्रि को चरखारी पूरी तरह तात्या टोपे के कब्जे में थी। राजा रतन सिंह ने बड़ी चालाकी से शरण पाये अंग्रेजों को मंगलगढ़ किले से बाहर निकलवा दिया। लगभग दो सप्ताह तक चरखारी तात्या टोपे और उनके सहयोगियों के मिले-जुले सैन्य बल से घिरी रही।अंत में तात्या टोपे की ओर से सुगिरा के राव महीपक्ष को संदेशवाहक बनाकर राजा रतन सिंह के पास मध्यस्थता करने के लिए भेजा गया। राव महीपक्ष ने राजा रतन सिंह से तात्या टोपे का साथ देने का आग्रह किया। साथ ही युद्ध के भयंकर परिणामों से भी अवगत कराया। भयभीत रतन सिंह ने राव महीपक्ष की बात स्वीकार कर ली। खून खराबे से बचने के लिए रतन सिंह ने अपने पुत्र जय सिंह को तीन लाख रुपए, जनेऊ व श्रीफल देकर राव महीपत के साथ भेज दिया। कुछ विद्वानों और राजा रतन सिंह के पक्षकारों का मत बिल्कुल अलग है उनका कहना है कि राजा रतन सिंह ने राज धर्म निभाते हुए शरण में आये जे एच कार्ने की रक्षा की और देश हित के लिए तात्या टोपे को तीन लाख रुपए की राशि दी।तात्या टोपे अपनी पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार कुलपहाड़ और जैतपुर होते हुए झांसी की ओर कूच कर गए कुलपहाड़ के दीवान देशपथ अपने अश्वारोही योद्धाओं के साथ

तात्या टोपे के साथ ही आगे बढ़ते रहे।अंग्रेजों के विरुद्ध तात्या टोपे का साथ देने और विद्रोह में शामिल होने के कारण राव महीपक्ष और दीवान देशपथ को अंग्रेज पकड़ना चाहते थे अंग्रेज अधिकारियों ने फिर से राजा रतन सिंह को अपने साथ मिला लिया। छल पूर्वक राव महीपक्ष को चरखारी बुलाया गया। राव महीपक्ष किसी भी अनहोनी से अनभिज्ञ अपने दोनों पुत्रों मर्दन सिंह व नौने बख्तावर सिंह के साथ चरखारी पहुंच गए। वहां उन्हें कैद कर लिया गया। रतन सिंह की करूणहदय रानियों ने राव महीपक्ष के दोनों पुत्रों को सुगिरा भिजवा दिया। रतन सिंह ने राव महीपक्ष को अंग्रेजों के हाथों सौंप दिया। पराक्रमी और देशभक्त राव महीपक्ष ने अधीनता स्वीकार नहीं की। १८५८ ईस्वी में राव महीपक्ष के साथ ८१ अन्य सैनिकों पर विद्रोह करने का आरोप लगाकर फांसी की सजा दी गई। यह फांसी बांदा के भूरागढ़ किले में दी गई थी। भूरागढ़ का किला आज भी राव महीपक्ष के बलिदान और शौर्य का प्रतीक है । राव महीपक्ष की पत्नी अपने दोनों पुत्रों को लेकर ग्राम पनारा के गढ़ महतो लोधी राजपूत के घर में रहने लगी। कालांतर में सुगिरा गढ़ी के सभी परमार वंशी लोग यत्र तत्र जाकर बस गए। राव महीपक्ष के वंशज आज भी पनारा और कुलपहाड़ में रहते हैं। विभिन्न अवसरों पर सुगिरा गढ़ी पहुंचकर राव महीपक्ष को याद करते हैं।

आलेख
-नरेन्द्र सिंह [शिक्षक]

<u>अन्य स्तम्भ</u>

साहित्य पुरोधा
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

हिंदी साहित्य के सूर्य, महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म २१ फरवरी १८९६ को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर में हुआ था। उनके पिता पंडित रामसहाय त्रिपाठी थे । पश्चिम बंगाल में पैदा होने के कारण, निराला की मातृ भाषा बंगाली थी। जब सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला बहुत छोटे थे तब उनकी माताजी का देहांत हो गया था। माता के देहांत के बाद, निराला का प्रारंभिक जीवन अत्यंत कठिनाइयों में बीता।
निराला जी हिन्दी कविता के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक माने जाते हैं। वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कई कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरुप से कविता के कारण ही है।
निराला का विवाह मनोहरी देवी के साथ हुआ। मनोहरी ने निराला को हिंदी सीखने के लिए प्रेरित किया। हिंदी सीखने के बाद उन्होंने बंगाली के बजाय हिंदी में ही कविताएँ लिखनी आरंभ कर दीं। विवाह के बाद उनका जीवन बचपन की तुलना में ठीक था परंतु, निराला जब २२ वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का भी देहांत हो गया। उनकी एक पुत्री भी थी, जिसका नाम सरोज था | पुत्री के विवाह के बाद, वह भी विधवा हो गयी और कुछ समय बाद उसका भी देहांत हो गया। उन दोनों की मृत्यु का कारण १९१८ के समय में चल रही फ्लू की बिमारी थी। पत्नी व पुत्री की मृत्यु के बाद, निराला का जीवन नीरस हो गया। परंतु धीरे-धीरे उन्होंने लेखन में अपना मन लगाया। और बाद में, लेखन ही उनका परिवार बन गया।
ऐसा कहा जाता है कि महादेवी वर्मा ने निराला को जीवनपर्यन्त ४० वर्षों तक राखी बांधी। वह महादेवी को अपनी मुँहबोली बहन मानते थे। जीवन भर निराली जी ने अत्यंत कष्ट उठाए|
उन्हीं के शब्दों में – "दुःख ही जीवन की कथा रही क्या कहूँ आज जो नहीं कही|"

निराला जी की प्रमुख रचनाएँ हैं - अनामिका (१९२३), परिमल (१९३०), तुलसीदास (१९३९), कुकुरमुत्ता (१९४२), अणिमा (१९४३), बेला (१९४६), नये पत्ते (१९४६), अप्सरा (१९३१), लिली (१९३४), सखी (१९३५) आदि|

<u>निराला की काव्य भाषा</u>

निराला जी काव्य भाष में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। खड़ी बोली पर उनका पूर्ण अधिकार था। उनका विश्वास था कि कवि को अपने भावों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने इस संबंध में स्पष्ट लिखा है कि हम "किसी भाव को जल्दी और आसानी से तभी व्यक्त कर सकेंगे, जब भाषा पूर्ण स्वतंत्र और भावों की सच्ची अनुगामिनी होगी। निराला की भाषा के संबंध में श्री दामोदर ठाकुर अपने अंग्रेजी निबंध में लिखा है जिसका अनुवाद प्रो० फूलचंद जैन 'सारंग' हिंदी में करते हुए कहा है-प्रत्येक कवि अपनी भाषा के स्तर का निर्माता होता है। इस दृष्टि से निराला ने अपनी भाषा के संबंध में जो किया है, संभवता हिंदी का कोई कवि उसकी तुलना नहीं कर सकता। निराला की काव्य रचना (कवितायें) अपने देश और उनकी भाषा का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसका कारण निराला की वह तेजस्विता है, जिसने हिंदी के पौरूष को उसकी अभिव्यंजना शक्ति को अमूल्य पूर्णता प्रदान की है। उन्होंने अपनी कविताओं में हिंदी जन की पूर्णता को उस समय अक्षुण्ण बनाये रखा है जबकि इनके सामायिक कवियों की भाषा अंग्रेजी शैली में डूबी रही। निराला की दृष्टि में काव्य भाषा का विशेष स्थान है। विशेष भावों की अभिव्यक्ति के लिए उनको वे सहस्रों शब्द गढ़ने पड़े जो संगीत ताल एवं लय के साथ खड़ी बोली में खप सके। निराला जी ने अपनी काव्य भाषा में भावों के अनुरूप ही शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी काव्य भाषा में खड़ी बोली के साथ-साथ अंग्रेजी तथा उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है।

स्रोत विकिपीडिया

अब हँसने की बारी

संता की बीवी को डिलीवरी के लिए हॉस्पिटल ले गए...

संता ने नर्स से बोला- बच्चा होने के बाद सीधे मत बताना,
नर्स- मतलब

संता- लड़का हो तो टमाटर बोलना और लड़की हो तो कहना प्याज हुई है...

इत्तेफाक से संता की बीवी के जुड़वा बच्चे हुए एक लड़का एक लड़की...

नर्स कन्फ्यूजन में बाहर आकर बोली बधाई हो सलाद हुआ है..

सामान्य हिंदी ज्ञान प्रश्नोत्तरी

१. एक भारतीय आत्मा किसे कहा जाता है ?
-माखन लाल चतुर्वेदी

२. गोदान के लेखक कौन हैं ?
-प्रेमचंद

३. किस लेखक ने जबलपुर से बसुधा नामक पत्रिका का प्रकाशन किया ?
-हरिशंकर परसाई

४. कबीरदास जी का जन्म कब हुआ ?
-१३९८ ई.

५. मृदुला गर्ग की रचना कठगुलाब किस विधा की रचना है ?
-उपन्यास

६. हिंदी की पहली कहानी कौनसी है ?
-एक टोकरी मिटटी

७. छायावाद के प्रमुख स्तम्भ कौन से हैं ?
-महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और सुमित्रानंदन पंत।

विनम्र निवेदन

हमारा प्रयास रहता है कि पत्रिका त्रुटिरहित प्रकाशित हो फिर भी कोई त्रुटि रह जाती है तो संपादक मंडल क्षमा प्रार्थी है।

ज्ञानेन पुंसां सकलार्थ सिद्धि :

संपादक संरक्षक - प्राचार्य,
ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

मुख्य संपादक - डॉ. कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव

छात्र संपादक - अरहम जैन कक्षा १२

सहयोग - हिंदी विभाग

तकनीकी सहायता - श्री विशाल कटारे एवं तकनीकी विभाग

छायांकन - श्री प्रशांत सील एवं विद्यार्थी

www.facebook.com/gyanodayakhurai
gyanodayaprincipal@gmail.com
www.gyanodayakhurai.org
youtube.com/UC_7RhrC1nipjZTanSKoEVEA
gyanodayakhurai/9826829441
gyanodayacampuscare.in
Gyanodaya khurai
9826829441, 07581-292149,292154

अधिक जानकारी प्राप्त करने हेतु क्यू आर को स्केन करें|

ज्ञानोदय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई, सागर (म.प्र.)